ऑशविट्ज़

की एक सच्ची कहानी

इसाबेल्ला लिएटनेर

यह पुस्तक मेरी सबसे छोटी बहन पोट्यो की स्मृति को समर्पित है. अपने प्यार से, मैं नफरत की उन ताकतों को मिटाने की कोशिश कर रही हूं जिन्होंने तुम्हें मार डाला.

इसाबेल्ला लिएटनेर का यह फोटो इस किताब में वर्णित घटनाओं से ठीक पहले लिया गया था.

अध्याय 1

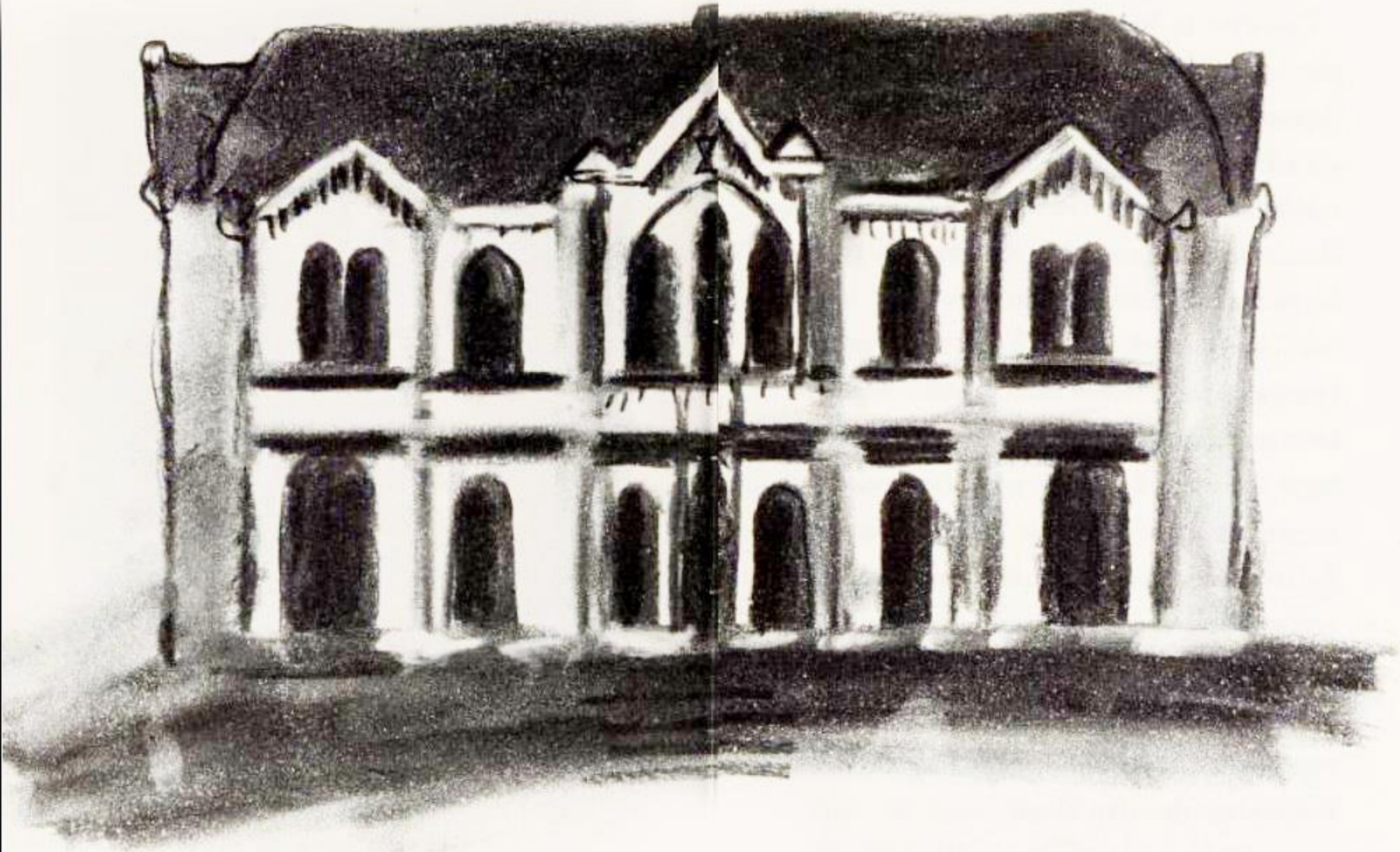

मेरा नाम इसाबेला है, और मेरा जन्म किसवरदा नामक एक छोटे से शहर में हुआ था.

किसवरदा, हंगरी के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है. आज, लगभग उन्नीस हजार लोग वहां रहते हैं. इनमें से केवल मुट्ठी भर ही यहूदी हैं.

1940 के दशक में जब मैं वहाँ रहती थी, तब क़रीब चार हज़ार यहूदियों किसवरदा में रहते थे. मैं उनमें से एक थी.

मैंने दुनिया में पहली बार हंगरी में आँखें खोलीं, जैसा कि मेरी चार बहनों और एक भाई, हमारे माता-पिता, उनके माता-पिता और उनके माता-पिता ने उनसे पहले किया था. किसी को भी याद नहीं कि हंगरी में हमारे परिवार का पेड़ कितने समय पहले लगाया गया था, लेकिन यह निश्चित है कि वो पेड़ बहुत समय पहले लगाया गया होगा.

आज, 20 मार्च, 1944 की तारीख, उस प्राचीन इतिहास में एक दिन की तरह लग सकती है. फिर भी मेरे लिए, वो बहुत पुरानी बात नहीं है. मुझे वो दिन स्पष्ट रूप से याद है.

वसंत की शुरुआत हो रही है. जल्द ही पेड़ फिर से हरे हो जाएंगे, और फूल कलियों से बाहर झाँकेंगे.

मेरी बहन, पोट्यो, परिवार की "बेबी" है. वो अभी किशोरी बन रही है. फिर रेजिना, फिलिप, मैं, चिचा और सिपी. हम सभी होशियार, सक्रिय युवा हैं.

हम सभी जानते हैं कि यूरोप में युद्ध छिड़ा हुआ है, लेकिन लड़ाई हमारे किसवरदा से कोसों दूर है. हम जानते हैं कि नात्ज़ी जर्मनी ने हमारे आसपास के देशों पर आक्रमण किया है. हम अफवाहें सुनते हैं कि उन देशों में यहूदियों के साथ भयानक बातें हुई हैं - और अब भी हो रही हैं.

लेकिन चाहें जो कुछ कहीं भी हो रहा हो, वो हमारे छोटे से हंगरी के शहर में नहीं हो सकता. जर्मनी जैसे महान राष्ट्र के लिए किसवरदा बहुत छोटा है, बहुत महत्वहीन है.

यह बात हम कम-से-कम, एक-दूसरे को बताने की कोशिश करते हैं. लेकिन हम अपने पिता को यह नहीं बता सकते हैं, क्योंकि वो अमेरिका में हैं और वो वहां हमारी आर्थिक सुरक्षा की व्यवस्था करने की कोशिश कर रहे हैं.

मेरे पिता 1939 में अमेरिका के लिए रवाना हुए. हंगेरियन यहूदी-नफरत करने वालों की एक टुकड़ी किसवरदा की सड़कों पर यहूदियों पर हमला करने की तलाश में घूम रही थी. तुरंत उसके बाद पिताजी अमरीका चले गए. नफ़रत करने वालों ने यहूदी-स्वामित्व वाली दुकानों की खिड़कियां तोड़ डालीं. उन्होंने दुकानदारों को पीटा और उनके ग्राहकों को धमकाया.

"हालत और बदतर ही होते जायेंगे," मेरे पिता ने कहा. "नात्ज़ी अभी तक हंगरी में नहीं पहुंचे हैं, पर स्थानीय यहूदी-नफरत करने वाले लोग पहले से ही यहाँ काम कर रहे हैं."

"हमें किसवरदा छोड़ना होगा. अमेरिका में हम सुरक्षित रहेंगे. जैसे ही मुझे इमीग्रेशन के कागजात मिलेंगे तो मैं तुम लोगों को बुलाऊंगा."

हम सभी ने सोचा कि वो थोड़े समय के लिए ही जाएंगे और फिर हम उनके पास अमेरिका चले जाएंगे. लेकिन वो हमारी गलती थी. दो साल तक पिताजी ने अमेरिका में हमारे लिए इमीग्रेशन के कागजात भेजने की कोशिश की, लेकिन उनकी सारी कोशिशें बेकार हुईं. जर्मनी के सहयोगी हंगरी ने, अमेरिका पर युद्ध की घोषणा कर दी थी, और तब तक कागजात के लिए बहुत देर हो चुकी थी.

मेरे पिता समुद्र के उस पार हैं, और हम किसवरदा में फंसे हैं.

हर दिन हम खतरनाक अफवाहें सुनते हैं. किसवरदा के लोगों के पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि वे वाकई में सच हैं या नहीं. हंगेरियन सरकार सभी समाचारों को नियंत्रित करती है. यहूदियों के साथ नात्ज़ियों के व्यवहार के बारे में कुछ भी बुरा, हमारे अखबारों में नहीं छपता है और न ही ऐसी कोई खबर हंगेरियन रेडियो पर प्रसारित होती है. सभी बुरी खबरें शहर से यात्रा करने वाले अजनबियों द्वारा लाई जाती हैं.

****

20 मार्च, 1944 की सुबह को यह सब बदल गया. हमारी खिड़की पर एक जोरदार दस्तक ने हमें जगा दिया.

"मुझे अंदर आने दो! मुझे अंदर आने दो! यह मैं हूँ, सन्नी. मुझे अंदर आने दो!" सन्नी? हमारा दोस्त था, जो बुडापेस्ट में पढ़ रहा था? किसवरदा में वो हमारी खिड़की के बाहर भला क्या कर रहा था?

"कृपया कर, मुझे अंदर आने दो! मुझे अंदर आने दो!"

हमारे घर के अंदर घुसने के बाद सन्नी के मुंह से यह शब्द निकले.

"जर्मनों की एक पूरी सेना ने कल बुडापेस्ट पर हमला किया! उन्होंने रेडियो स्टेशन और अखबार के दफ्तरों को कब्ज़ा कर लिया. वे पूरे शहर में यहूदियों का शिकार कर रहे हैं. जब वे आए तो मैं स्कूल की लाइब्रेरी में था. वहां पर बंदूकों के साथ नात्ज़ी सैनिक घूम रहे हैं.

'सभी यहूदी आगे आएं!' वे लोग चिल्लाए. 'सभी यहूदी खड़े हो जाओ! आगे आओ! तेज़ी से!'

"उन्होंने किताबों और कागजों को इधर-उधर फेंका. उन्होंने छात्रों को उनकी सीटों से बाहर खींचा. उन्होंने मेज और कुर्सियों को उलट दिया. उन्होंने फर्श पर किताबें बिखेर दीं.

"छात्र चिल्ला रहे थे. लड़के और लड़कियां रो रहे थे. बच्चे छिपने की कोशिश कर रहे थे.

"इस माहौल में, मैं एक खुली खिड़की से भाग निकला. मैं सीधा रेलवे स्टेशन पहुंचा और रात की ट्रेन पकड़कर किसवरदा आया.

"पूरे तीन सौ किलोमीटर की यात्रा में मैं मौत के डर से आतंकित था. मैं अभी भी डर से कांप रहा हूं.

"कृपया मुझे सूर्यास्त तक छुपाएं. मैं अंधेरा होने के बाद चला जाऊंगा."

अपनी बात पर खरा उतरने वाला सन्नी उस शाम को अपने माता-पिता के गांव चला गया.

फिर हमें उसकी कभी कोई खबर नहीं मिली.

अध्याय दो

रातों-रात किसवरदा में जिंदगी बदल गई. जिसे हम पहले सिर्फ अफवाह समझते थे वो अब सच निकलने लगी.

टाउन उद्घोषक सार्वजनिक चौक में आया. वो एक नुकीला टोपी पहने और टिन ड्रम लिए, एक छोटा सा आदमी था.

"सुनो! सब लोग ध्यान से और कान खोलकर सुनो!"

टाउन उद्घोषक ने अपना ड्रम बजाया. फिर हर कोई उसके पास दौड़ा हुआ आया.

"ध्यान से सुनो!" वो छोटा आदमी चिल्लाया.

"यह बुडापेस्ट के आदेश हैं. इन्हें ध्यान से सुनो. इन आदेशों का पालन करना अनिवार्य है.

"1. कल से, सभी यहूदियों को अपने कपड़ों पर एक पीला सितारा पहनना होगा, ताकि वे यहूदियों के रूप में अलग दिखाई दें.

"2. आज रात से, कोई भी यहूदी शाम 7:00 बजे के बाद सड़कों पर नहीं चल सकता है.

"3. कल से, कोई भी यहूदी बच्चा पब्लिक स्कूल में नहीं जा सकता है."

हमें अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ. टाउन उद्घोषक ऐसी बातें कैसे कह सकता था? कुछ गलती अवश्य हुई होगी.

लेकिन कोई गलती नहीं हुई. माँ ने उस दोपहर हमारे कपड़ों पर पीले सितारे सिल दिए. उन्होंने हमें शाम 7:00 बजे के बाद घर के अंदर ही रखा. और उन्होंने रेजिना और पोट्यो को अगली सुबह स्कूल नहीं भेजा और उन्हें घर पर ही रखा.

"यह बुडापेस्ट के आदेश हैं. इन्हें ध्यान से सुनो. टाउन उद्घोषक वापस चौक में आया.

"ध्यान दो!" वो चिल्लाया, फिर हम उसके चारों ओर इकट्ठे हुए. "आज के आदेश इस प्रकार हैं:

"I. कोई भी यहूदी रेडियो का मालिक नहीं हो सकता. सभी यहूदियों को टाउन हॉल में अपने रेडियो को जमा करना होगा. ऐसा नहीं करने पर सजा मिलेगी.

"2. कोई भी यहूदी साइकिल की सवारी नहीं कर सकता है. सभी यहूदियों को पुलिस स्टेशन में अपनी साइकिल जमा करनी होंगी. ऐसा नहीं करने पर सजा मिलेगी.

"3. कोई भी यहूदी गैर-यहूदियों से सार्वजनिक रूप से बात नहीं कर सकता है. इन आदेशों का कड़ाई से पालन किया जाएगा!"

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, नए नियमों की घोषणा होती रही. यहूदी फलां नहीं कर सकते. यहूदी ढिमका नहीं कर सकते, आदि.

पासओवर, स्वतंत्रता का यहूदी त्योहार, आने वाला था, लेकिन मिस्र में दासता से अपने पूर्वजों के प्राचीन पलायन का जश्न मनाना अब हमारे लिए कठिन था.

हमारा परिवार अलग हो गया था, जब हमें एक-साथ होना चाहिए था. पर पिताजी दूर अमेरिका में अकेले और चिंतित थे. हम हंगरी में थे. हम भयभीत थे और अपने कपड़ों पर पीले सितारे पहने हुए थे.

हमारा रेडियो, टाउन हॉल की एक कोठरी में कैद था. हमारे घर में कोई संगीत नहीं था - और इससे भी बदतर - दुनिया की कोई खबर हम नहीं सुन सकते थे. किसवरदा में हम सभी लोग, अपने-अपने घरों में, खुद को कैदियों की तरह महसूस कर रहे थे.

पासओवर के अगले दिन, दो हंगेरियन पुलिस हमारे घर आए. वो हमारी स्थानीय पुलिस के अलग थे. स्थानीय पुलिस केवल धारदार हथियार लेकर चलती थी, लेकिन आज जो आये उनके पास संगीनों के साथ राइफलें थीं. उनकी टोपी पर पंख लगा था.

"अपने पूरे परिवार को बाहर लाओ. भोजन और कपड़े अपने साथ में लो," उनमें से एक माँ पर चिल्लाया. "देखो, दस मिनट में बाहर आओ!"

भयभीत, हमने तुरंत उनकी आज्ञा का पालन किया - माँ, सिपी, चिचा, फिलिप, रेजिना, पोट्यो, और मैंने.

बाहर मैदान में अन्य यहूदी परिवार भी इकट्ठे हुए थे - मिसेज़ क्लेन और उनकी विकलांग बेटी, एस्तेर; मिसेज़ फ्राइड और उनके पांच छोटे बच्चे, उनमें से हरेक रो रहा था; मिसेज़ हिर्श, विधवा, उनकी भतीजी, और उनके वृद्ध पिता, जो सब एक-साथ रहते थे; और मिसेज़ फेल्ड और उसके बच्चों का अनियंत्रित झुंड.

"ठीक व्यवहार करो!" मिसेज़ फेल्ड अपने बच्चों पर चिल्ला रही थीं. "चुप रहो! क्या तुम देख नहीं सकते कि क्या हो रहा है?"

"ठीक है," फिर हमने एक आदेश सुना। "चलो आगे बढ़ो!"

धीरे-धीरे मैदान खाली हो गया. हम सभी ने पुलिस की चौकस निगाहों के बीच एक लाइन में मार्च किया.

माँ, चिचा और मैं कपड़ों से लदे सूटकेस ढो रहे थे. फिलिप, कंबल और बिस्तर ले जा रहा था. सिपी और रेजिना के पास भोजन, साबुन, ब्रश, बर्तन और रसोई के बर्तनों से भरे थैले थे. पोट्यो ने अपनी पसंदीदा पोशाक पहनी थी और अपना कोट उसने बाएं हाथ पर लपेटा था. उसने अपने दाहिने हाथ में, किताबों से भरा स्कूल बैग पकड़ा था.

कई ब्लॉक दूर, एक खाली इलाके में, हम अन्य पड़ोस के यहूदी समूहों से मिले. वे पहले से ही वहां इकट्ठे थे और हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे. किसलिए? वो हमें नहीं पता था. हम केवल वही पता था जो सशस्त्र हंगेरियन हमें बताते थे. और वे हमें कुछ भी नहीं बताते थे.

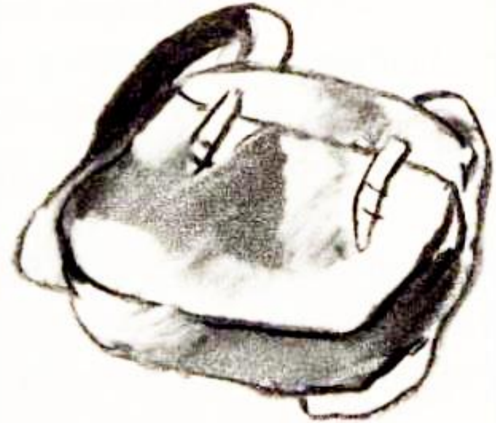

अंत में, प्रत्येक परिवार को एक गरीब इलाके में रहने के क्वार्टर दिए गए. एक बस्ती (घेट्टो) बनाई जानी थी. जहाँ कभी चार-पाँच लोग रहते थे, वहां अब तीस-चालीस लोगों की भीड़ थी.

अपनी तंग जगह में, हमने अपना सामान रख दिया. हम बहुत थके हुए और भ्रमित थे.

"पहली चीज जो हम करेंगे," माँ ने कहा, " वो है सफाई! हमें नहीं पता कि हम यहां कितने समय तक रहेंगे, इसलिए हम लोग साफ रहेंगे. हमें बीमार नहीं पड़ना चाहिए."

माँ ने साबुन और ब्रश लिया और वो काम पर लग गयीं. हम सभी ने उनकी मदद की, पानी ढोया, ब्रश और स्क्रब किया. रसोई का फर्श, सिंक, खिड़की, शौचालय. और जो पुरानी मेज और कुर्सियाँ हमें वहाँ मिलीं.

हमारे चारों ओर, अन्य यहूदी परिवार भी वही काम कर रहे थे - सफाई, रगड़ाई और धुलाई. हमें बीमारी का डर था, और हम जानते थे कि स्वच्छता हमारी स्वस्थ रहने में मदद करेगी.

एक अफवाह यह थी कि हमें "पूर्व" में बसाया जाएगा - जो पता नहीं कहाँ था - लेकिन, इस बीच, स्वच्छ रहना महत्वपूर्ण था.

अध्याय 3

अट्ठाईस मई को मेरा जन्मदिन था, लेकिन हमने उसका कोई उत्सव नहीं मनाया. उस दिन, एक युवा जर्मन सैनिक चमचमाती पिस्तौल और भौंकने वाले कुत्ते के साथ यहूदी बस्ती में आया.

"आप सभी सुबह 4:00 बजे यहाँ से निकलने के लिए तैयार रहें," उसने घोषणा की. "आप में से प्रत्येक 50 किलो सामान साथ ले जा सकता है. समय पर तैयार रहें, अन्यथा आपको गोली मार दी जाएगी!"

निर्वासन? इसका क्या मतलब था?

हम में से प्रत्येक ने अपने सबसे अच्छे कपड़े इकट्ठे किए. कपड़े, स्कर्ट, स्वेटर, कोट, जूते. कुछ भी और सब कुछ जिसके बारे में हम सोच सकते थे. लेकिन हम में से कोई भी यह नहीं जानता था कि हमारे कपड़ों को कितने समय तक चलना होगा.

मैंने अपने ऊंट के बालों का सुंदर कोट लिया, जो मई के अंत में पहनने के लिए बहुत गर्म था, लेकिन मैं उसे पीछे नहीं छोड़ सकती थी. मैंने अन्य कीमती कपड़ों के साथ उसे अपनी बांह के नीचे दबा लिया.

अंत में, हमने अपनी यात्रा के लिए जो कुछ भी बचा खाना था उसे पैक किया. वो ज्यादा नहीं था, लेकिन उसमें ब्रेड, जैम और उबले हुए आलू थे.

29 मई, 1944 को सुबह 4:00 बजे के अंधेरे में, यहूदी बस्ती में सैकड़ों परिवार अपने आंगनों में दिखाई देने लगे. प्रत्येक पुरुष, महिला और बच्चा एक बंडल, पैकेज, बैकपैक या सूटकेस ले जा रहा था. प्रत्येक जीवन भर की अपनी सबसे अच्छी संपत्ति अपने साथ ले जा रहा था.

हवा में एक दहशत का माहौल था. नात्ज़ी बंदूकों और कुत्तों के साथ थे. वे हमारी हर हरकत पर नज़र रख हुए थे.

फिर न जाने कहाँ मेरा भाई फिलिप गायब हो गया.

"भगवान का शुक्र है कि वो बचकर भाग निकला," मेरी माँ ने फुसफुसाया.

लेकिन कुछ देर भर बाद, फिलिप वापस आ गया. "मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जा सकता था. हम सभी को एक साथ जाना चाहिए," उसने कहा.

हमारे परिवार और किसवरदा के अन्य सभी यहूदी परिवारों को एक झुंड में, रेलवे स्टेशन ले जाया गया.

मुख्य सड़क हमारे सज्जन पड़ोसियों से भरी थीं. हमारे कई सहपाठी भी उनमें मौजूद थे. उन्होंने हमें वहां से गुज़रते हुए देखा. कुछ लोग हमें देखकर मुस्कुरा भी रहे थे. उन्हें लग रहा था कि वे हमें फिर कभी नहीं देख पाएंगे.

स्टेशन पर, मुझे आश्चर्य हुआ कि ट्रेन में यात्री डिब्बे नहीं थे. वहां केवल बिना खिड़कियों वाली पुरानी मवेशी कारें थीं. उसका जवाब साफ़ था. नाजियों हमें मवेशी कारों में ढोने के लिए मजबूर कर रहे थे.

नात्ज़ी हम पर जर्मन भाषा में चिल्लाए, एक ऐसी भाषा जिसे हम समझते नहीं थे. वो लॉस! लॉस! कह रहे थे. ऐसा लग रहा था जैसे कुत्ते भौंक रहे हों.

उन्होंने प्रत्येक मवेशी कार में सत्तर से अस्सी जीवित लोगों को पैक किया. बूढ़े आदमी और औरतें. बच्चे अपनी मां से चिपके थे. माताओं की गोद में शिशु थे.

माँ ने पोट्यो को अपने शरीर के पास रखा. फिलिप ने हमारे सामान से चारों ओर सुरक्षा की दीवार बनाई. सिपी, चिचा, रेजिना और मैंने अलग होने से बचने के लिए एक-दूसरे का हाथ पकड़कर रखा था. मवेशी डिब्बे को लबालब भर देने के बाद दरवाजा बंद कर दिया गया.

इतने सारे लोग थे और इतनी कम जगह, कि कोई बैठ तक नहीं पा रहा था. हम मुश्किल से सांस ले पा रहे थे. एक कर्कश और गड़गड़ाहट के साथ, ट्रेन किसवरदा से दूर लुढ़कने लगी.

दो दिनों तक हमें न खाने को कुछ दिया गया, और न ही पीने का पानी. हमने वही खाया जो हम यात्रा में अपने साथ लाए थे - डबलरोटी, जैम और उबले आलू. खाना काफी नहीं था, लेकिन हमने उसे खूब चबा-चबाकर खाया.

कई लोग बीमार पड़ गए. मिसेज़ क्लेन पागल हो गईं. वो घंटे-दर-घंटे चिल्लाती रहीं. मिसेज़ फ्राइड की छोटी लड़की, सारा, उसकी बाहों में ही मर गई. हमारी यात्रा शुरू होने के कुछ ही समय बाद मिसेज़ हिर्श के वृद्ध पिता की मृत्यु हो गई. लेकिन ट्रेन कहीं नहीं रुकी. जब यह हुआ, तब इकतीस मई को, हम पोलैंड में थे, ऑशविट्ज़ नामक स्थान पर, एक ऐसी जगह जिसके बारे में हममें से किसी ने पहले कभी नहीं सुना था.

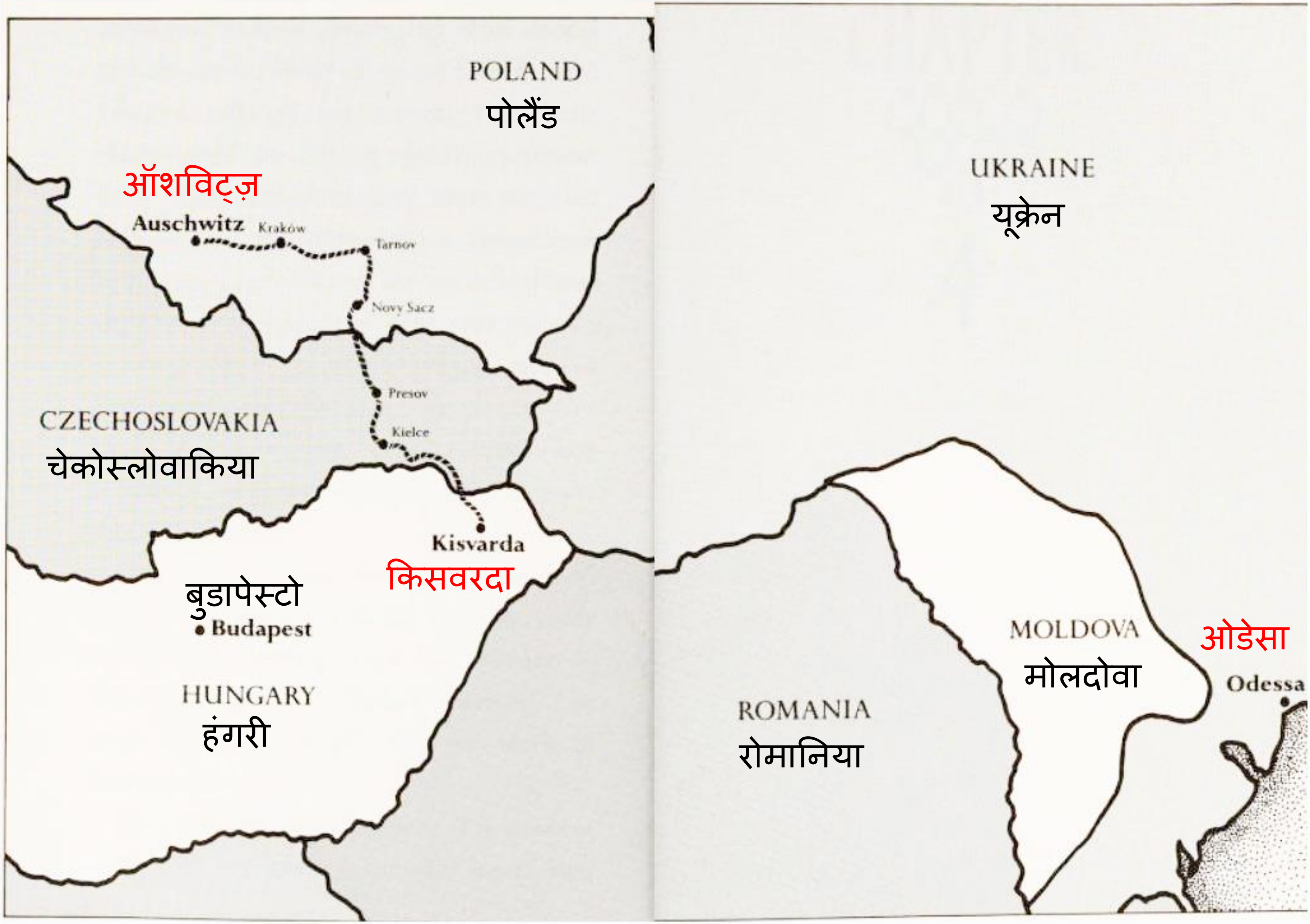

POLAND
पोलैंड
UKRAINE
यूक्रेन
ऑशविट्ज़
Auschwitz
Krakow
Tarnov
Novy Sacz
Presov
Kielce
CZECHOSLOVAKIA
चेकोस्लोवाकिया
Kisvarda
किसवरदा
बुडापेस्टो
Budapest
HUNGARY
हंगरी
MOLDOVA
मोलदोवा
ओडेसा
Odessa
ROMANIA
रोमानिया

अध्याय 4

जब मवेशी डिब्बों के दरवाजे खोले गए, तो बंदूकों और कुत्तों के साथ कई नात्ज़ी हमारा इंतजार कर रहे थे. अजीब-सी दिखने वाले आदमियों ने चिल्लाकर हमें ट्रेन से नीचे उतारा. हमारा सारा निजी सामान पीछे छूट गया. मेरा सुंदर ऊंट के बालों वाला कोट, जिसे मैंने इतनी सावधानी से रखा था, मवेशी कार के फर्श पर ही छूट गया.

"आउट! आउट! लॉस! लॉस! हैस्ट! फास्ट!"

चिल्लाने वाले पुरुषों ने गंदे धारीदार सूट पहने थे, और उनके हाथों में लकड़ी के डंडे थे. जो बहुत धीमी गति से आगे बढ़ता था वे उसे पीटते थे. बाद में हमें पता चला कि वो लोग नात्ज़ियों के कैदी थे. उनमें से कुछ अपराधी थे, जो जर्मन पुलिस के लिए काम कर रहे थे.

"मेरे साथ रहो! साथ रहो!" माँ हम पर चिल्लाईं.

चांदी की पिस्तौल लिए एक सुंदर जर्मन अधिकारी इंचार्ज था. उसने सफेद दस्ताने पहने थे. और जब कोई उसके सामने से गुज़रता तो वो अपने दाहिने अंगूठे को कभी बाईं ओर कभी दाईं ओर इंगित करता था. हमने सीखा कि इस निरीक्षण को "चयन" कहा जाता था. वो जर्मन अधिकारी डॉ. जोसेफ मेंजेल थे.

डॉ मेंजेल ने मेरी माँ और मेरी बहन पोट्यो को बाईं ओर भेज दिया.

"मजबूत बनो," माँ ने रोते हुए हमें छोड़ दिया. "मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ."

डॉ. मेंजेल ने हममें से बाकी लोगों को दाईं ओर भेज दिया.

"पोट्यो, आई लव यू!" मैं चिल्लाई, लेकिन मुझे नहीं पता कि उसने मुझे सुना या नहीं.

फिलिप को उन अन्य लोगों के साथ ले जाया गया जिन्हें दायीं ओर भेजा गया था.

सिपी, चिचा, रेजिना और मुझे अन्य महिलाओं के साथ एक बड़े गीले कमरे में ले जाया गया. वहां, हंसते हुए जर्मन सैनिकों के सामने, हमें अपने कपड़े उतारने के लिए मजबूर किया गया, जिसे वे "कीटाणुशोधन" कहते थे.

नंगे खड़े हम शर्मिंदा, लज्जित और भयभीत थे. फिर, जब हम वहाँ खड़े थे, तब कुछ महिलाओं ने कतरनी से हमारे सारे बाल काटने शुरू कर दिए. रेजिना और मैं रोने लगे. सिपी और चिचा अपनी नग्नता को छिपाने की कोशिश में सिसकियां ले रही थीं. लेकिन जर्मनों ने उसकी कोई परवाह नहीं की.

जल्द ही हम पूरी तरह से बाल विहीन थे.

मैंने अपनी बहनों को देखा. वे मुझे घूरती रहीं. मैं मुश्किल से उन्हें पहचान पाई. वे अब बिल्कुल भी सिपी, चिचा या रेजिना जैसी नहीं दिख रही थीं. वे अजीबो-गरीब दो पैरों वाले जानवरों की तरह लग रही थीं जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था. मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि मैं भी उनके जैसा ही दिखती हूं.

एक महिला कैदी ने अब हमारी ओर तन ढंकने के लिए फटे-पुराने कपड़े फेंके.

अचानक, नात्ज़ियों द्वारा अनदेखी के बीच, बिना बालों वाला एक युवक खिड़की से चढ़ आया. "यह मैं हूँ, फिलिप," वो फुसफुसाया. "जो कुछ वे तुम्हें देते हैं उसे खाओ, क्योंकि हमें जीवित रहना है. हम लोग अब ऑशविट्ज़ में कैदी हैं, लेकिन एक दिन हम आज़ाद होंगे. और उन्हें अपने कर्मों का फल भुगतना होगा. इसलिए, ज़िंदा रहने के लिए खाओ. मैं तुमसे प्यार करता हूँ."

फिर वो उतनी ही तेजी से और रहस्यमय ढंग से गायब हो गया.

अध्याय 5

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, हमने सीखा कि ऑशविट्ज़ क्या था. वो एक विशाल नात्ज़ी मृत्यु शिविर था, जो कांटेदार तारों की बाड़ से घिरा हुआ था. कैदियों को भागने से रोकने के लिए तारों में बिजली बहती थी. ऑशविट्ज़ में, 1944 की गर्मियों में, हर दिन, दस से बीस हज़ार लोग मारे जाते थे.

अधिकांश हत्याएं तब होती थीं जब मवेशी कारें थके हुए कैदियों के साथ वहां पहुंचतीं थीं. डॉ मेंजेल द्वारा बाईं ओर भेजे गए लोगों, जैसे माँ और पोट्यो को, सीधे मृत्यु के लिए ले जाया जाता था.

हत्या, मुख्य रूप से ज़हर गैस कक्षों (गैस-चेम्बर) में की जाती थी जिन्हें नहाने के गुसलखानों जैसे बनाया गया था. जिन लोगों को मरने के लिए "चयनित" किया जाता था, उनमें से हरेक को साबुन की छोटी टिकिया दी जाती थी.

"आप एक अच्छा गर्म स्नान करने जा रहे हैं. आप अपने सभी कपड़े उतार दें, और उन्हें वहीं छोड़ दें जहां आप हैं. जब आप वापस आएंगे तो आप कपड़े वहीं पाएंगे."

अपनी लंबी मवेशी कार यात्रा के बाद खुद को साफ़ करने के लिए उत्सुक कैदी उस आज्ञा का तुरंत पालन करते थे. उन्हें नहीं पता था कि वे अपनी मृत्यु के लिए जा रहे थे, क्योंकि एक बार जब वे "शॉवर" कमरों में बंद हो जाते, तब नात्ज़ी उन कमरों में पानी नहीं, जहरीली गैस छोड़ते थे.

गैस से मरने के तुरंत बाद, शवों को श्मशान नामक पास की भट्टी में ले जाया जाता था. वहां, उनके शवों को जितनी जल्दी संभव होता जला दिया जाता था.

चारों ओर मीलों तक, घने काले धुएँ से आसमान में अंधेरा छा जाता था और मानव मांस के जलने की भयानक गंध आती थी.

उस समय ऑशविट्ज़ में लगभग सभी कैदी यहूदी थे. हमें “ब्लॉक” नाम के एक बैरक में रखा गया था. प्रत्येक ब्लॉक में एक हजार कैदी और एक कापो होता था. कापो एक कैदी होता था, जो वहां का इंचार्ज होता था. ऑशविट्ज़ के मेरे हिस्से में बत्तीस ब्लॉक थे. मेरे हिस्से का नाम लेगर-सी था.

मेरे ब्लॉक के कैदियों के पास बेड-बिस्तर नहीं थे. इसके बजाए, हम ट्रिपल-डेक लकड़ी के शेल्फ पर सोते थे जिन्हें "प्रिट्चेस" कहा जाता था. मैं अपनी तीन बहनों और दस अन्य लड़कियों के साथ एक ऊपरी शेल्फ पर सोई.

हमारे नीचे की शेल्फ में भी चौदह लड़कियां थीं, और नीचे की शेल्फ में चौदह लड़कियां थीं. पर इतने अधिक भार से शेल्फ अक्सर टूट जाते थे, और ऊपर वाले लोग नीचे की लड़कियों पर गिर पड़ते थे. उस रात जब शेल्फ टूटते तब भयंकर चीख-पुकार मचती थी. और उसके बाद कोई सोता नहीं था.

यहां तक कि जब "प्रिट्चेस" नहीं टूटते थे तो भी हम सो नहीं सकते थे, क्योंकि जर्मन हमें गिनने के लिए रोल-कॉल लेते थे. रोल-कॉल को "ज़हलप्पेल" कहा जाता था, और उन्हें दिन में दो बार ज़रूर आयोजित किया जाता था.

रोल-कॉल के दौरान, सभी को ब्लॉक के बाहर, लाइन में खड़ा होना पड़ता था. हम पाँच की पंक्तियों में खड़े होते थे, और सैकड़ों पंक्तियाँ होती थीं.

हमें गिनने में घंटों लग जाते थे और इस दौरान हमें बिना हिले-डुले खड़े रहना पड़ता था. कापो (पुलिस), जो खुद कैदी थे, जर्मनों की मदद करते थे. अगर हम लाइन से बाहर निकलते तो वो हमें पीटते थे.

नात्ज़ियों ने हमें जो खाना दिया उसमें ज्यादातर सूप और ब्रेड होता था. सूप गंदे पानी की तरह और बदबूदार होता था. डबलरोटी, में हमें आटे के साथ बुरादा मिला होता था. सबसे पहले, सिपी और चिचा ने मेरी नाक पकड़ी और तभी मैं सूप को अपने गले से नीचे उतार पाई. बाद में, मेरी अत्यधिक भूख के कारण, मुझे वो खाकर खुशी हुई.

डॉ. मेंजेल यह तय करते थे कि कौन ज़िंदा रहेगा और कौन मरेगा. अगर आप बीमार, बूढ़े या कमजोर थे, तो आपको जीने का कोई अधिकार नहीं था. छोटे बच्चों या शिशुओं वाली माताओं को तुरंत मरने के लिए चुना जाता था. केवल मजबूत और स्वस्थ ही जीवित रहने की आशा कर सकते थे.

डॉ. मेंजेल से हर कोई डरता था. जब भी वह चयन करने आते, सिपी, चिचा, रेजिना और मैं उनसे बचने के लिए अपने ब्लॉक से दूसरे ब्लॉक में भाग जाते थे. एक रात उन्होंने अपनी चांदी की पिस्तौल से हम पर गोली चलाई. सौभाग्य से, अंधेरे में उनका निशाना चूक गया.

दूसरी बार डॉ. मेंजेल ने रोल-कॉल के दौरान चयन किया. तब भागना नामुमकिन था, क्योंकि हम सब पांच की कतार में खड़े थे. हम एकदम सीधे खड़े थे. हमने रेजिना के गालों को गुलाबी और स्वस्थ दिखने के लिए उन्हें कई बार दबाया. हमने उसे पैर की उँगलियों पर खड़े होने के लिए कहा ताकि वो ज्यादा ऊंची लगे. इस तरह वो वास्तव में जितनी लंबी थी, उससे कहीं अधिक ऊंची लग रही थी. और फिर डॉ. मेंजेल हमारे पास से शांति से गुजर गए.

हमें ऑशविट्ज़ लाए जाने के कुछ दिनों बाद, एक कैदी हमारे लिए लकड़ी का एक टुकड़ा लाया, जिस पर निर्देश और एक संदेश खुदा हुआ था.

निर्देशों में कहा गया है: "मेरी चार बहनें लेगर-सी में हैं. उनका नाम काट्ज है. जिसे भी वो लकड़ी का टुकड़ा मिले वो कृपया कर उसे बाड़ के उस पार फेंक दें ताकि वो उन तक पहुंच जाए."

संदेश छोटा था: "तुम्हें जीना चाहिए. तुम्हें निश्चित रूप से ज़िंदा रहना चाहिए. मैं तुमसे प्यार करता हूँ."

फिलिप ने हम तक पहुँचने का एक रास्ता खोज निकाला था. उनका संदेश संक्षिप्त था, लेकिन उसके संदेश ने हमारी आत्माओं को लंबे समय तक खुश रखा.

ऑशविट्ज़ में बिताए छह महीनों के दौरान, हमने कई कैदियों को भूखे मरते हुए देखा.

वे भूखे इसलिए नहीं थे क्योंकि वे उस भयानक भोजन को खा नहीं सकते थे, बल्कि इसलिए, कि वो बर्बाद खाना भी उन्हें पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता था.

अक्सर भूखे कैदी, चलते-फिरते कंकालों की तरह लगते थे. उन्हें "मुसलमान" कहा जाता था. जब डॉ. मेंजेल ने किसी "मुसलमान" को देखते, तो वो उसे तुरंत गैस-भट्टी में भेज देते.

हमने अन्य कैदियों को नाजियों द्वारा पिटते या गोली खाते हुए भी देखा. एक बार रोल-कॉल के दौरान, एक महिला नाज़ी अधिकारी इरमा ग्रीज़ा ने चिचा को घुटने टिकाकर बैठने को कहा और रोल-कॉल खत्म होने तक हवा में दो भारी पत्थरों को पकड़े रखने को कहा.

"यदि तुमने उन्हें छोड़ दिया तो बाद में तुम्हें उसका बहुत दुःख होगा," ग्रीज़ा ने धमकाया.

उसका मतलब था कि चिचा को गोली मार दी जाएगी.

लेकिन चिचा बहुत बहादुर निकली. उसने उन पत्थरों को घंटों तक ऊँचा उठाए रखा और उन्हें गिराया नहीं. यह एक छोटी सी जीत थी, लेकिन फिर भी वो एक जीत थी. चिचा ज़िंदा रही, और जिसने भी उसे देखा, उन सबका हौसला बढ़ा.

अध्याय 6

1944 के अंत में, सिपी, चिचा, रेजिना, और मुझे ऑशविट्ज़ से पूर्वी जर्मनी के एक अन्य जेल, एक अन्य यातना शिविर में ले जाया गया. उसका नाम बिरनबाउमेल था.

ऑशविट्ज़ के विपरीत, बिरनबाउमेल मृत्यु शिविर नहीं था. वहां कोई गैस कक्ष, भट्टी या विद्युतीकृत कांटेदार तारों की बाड़ भी नहीं थी. हम झोपड़ीनुमा लकड़ी के बैरक में सोते थे जिसे "सेल्ट्स" कहा जाता था.

वहां एक-मंजिली इमारतें थीं. प्रत्येक "सेल्ट" ज़मीन पर टिका होता था. क्योंकि उसकी दीवारें बहुत पतली थीं, इसलिए हम बाहर हवा के झोंकों को सुन सकते थे.

हर दिन जर्मन पुलिस हमें शिविर से बाहर, कस्बे से होते हुए, एक जंगल के किनारे ले जाती थी. वहाँ वे हमें ठंडी, कठोर ज़मीन में गड्ढे खोदने के लिए विवश करते थे. वे गड्ढे, रूसी टैंकों और ट्रकों को फंसाने के लिए बनाए जा रहे थे, जिससे रूसी, जर्मनी में आगे नहीं बढ़ पाएं.

जब नाजी गार्ड इधर-उधर देख रहे होते तो मैं खुदाई करना बंद कर देती थी. मेरे लिए खुदाई का मतलब जर्मनों की मदद करना था. खुदाई नहीं करने का मतलब जर्मन लोगों से लड़ना था. और मुझसे जितनी बार वो बन सका, मैं लड़ी.

दिसंबर बीत गया, और अब 1945 की जनवरी आई. बर्फ ने जमीन को ढक लिया. हमारा हौंसला कम हुआ. हम ठंडे और भूखे थे. मैं तेज बुखार से बीमार थी. लेकिन हम अभी भी जीवित थे, और हम अभी भी एक-साथ थे, और हम अब ऑशविट्ज़ में नहीं थे. इससे हमारी उम्मीद बढ़ी.

नए साल के तीसरे सप्ताह के अंत में, जर्मन पुलिस ने हमें फिर से स्थानांतरित करने का फैसला किया. हालांकि इस बार वो ट्रेन यात्रा नहीं थी. नाज़ियों ने हमें पाँच की पंक्तियों में खड़ा किया और हमें जर्मनी के अंदर एक अन्य कंसंट्रेशन (यातना) शिविर बर्गन-बेलसेन तक ले जाना शुरू किया.

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि हम में से कई कैदी बेहद कमजोर थे और तीन सप्ताह तक बर्फ से ढकी सड़कों पर चलने में सक्षम नहीं थे. नाजियों ने उन लोगों को पीटा जो पर्याप्त तेजी से नहीं चल सके. जब वे गिरे तो नाजियों ने उन्हें गोली मार दी. वो यात्रा शीघ्र ही, एक मृत्यु मार्च बन गई.

तीसरे दिन, एक बर्फ़ीला तूफ़ान शुरू हुआ. बर्फ भारी गिरने लगी, और तेज़ हवा गरजने लगी. थके हुए कैदियों का कॉलम उस समय की तुलना में बहुत छोटा था, जब हमने शुरुआत की थी. कई कैदी रास्ते में गिर पड़े थे और मर गए थे.

जैसे ही हम एक नए गाँव के पास पहुँचे, हमारे साथ के नात्ज़ी पहरेदार पीछे की ओर भागने लगे. कुछ कैदी भी भागने की कोशिश करने लगे.

जल्दी से, चिचा ने कॉलम छोड़ दिया और वो सड़क से दूर एक सुनसान घर की ओरे ओर भाग गई. रेजिना ने चिचा का अनुसरण किया, और मैंने रेजिना का अनुसरण किया. हम में से किसी ने भी पीछे मुड़कर नहीं देखा. हम सभी को लगा कि सिपी भी हमारे पीछे होगी.

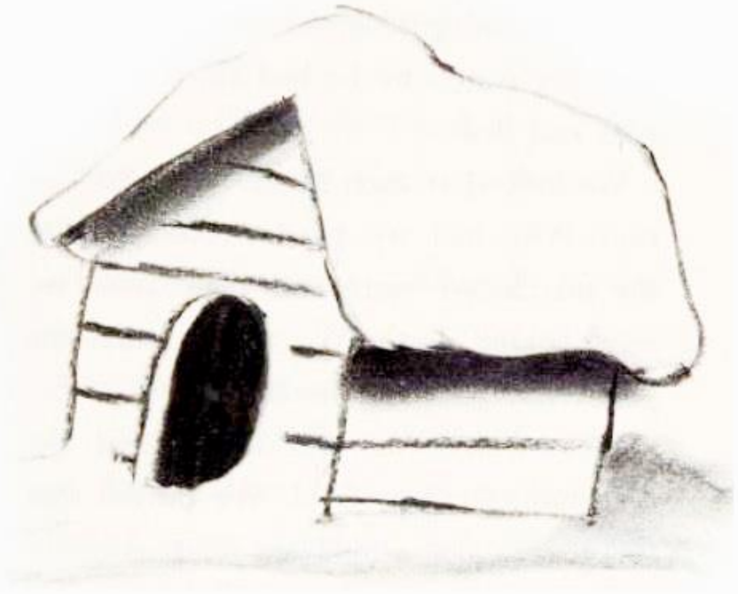

रेजिना और मैं एक खाली कुत्ते के छोटे घर में रेंगकर छिप गए. हमने बाहर झाँका, लेकिन हमें वहाँ कुछ नहीं दिखा. चिचा, हमें लगा सिपी के साथ घर में होगी, लेकिन हमें उस बात पर यकीन नहीं था.

हमने गोलियों की आवाज सुनी. फिर हमने देखा कि एक नात्ज़ी गार्ड अपने कुत्ते के साथ लौट रहा था. हमें यकीन था कि गार्ड ने भागने वाली लड़कियों को मार डाला होगा.

फिर हमने एक दूसरे को देखा. हम क्यों भागे थे? हमने भागने की कोशिश क्यों की थी? मार्च के दौरान भी हम जीवित रहे. फिर अब हम मौत का जोखिम क्यों उठा रहे थे? हमें यकीन था कि गार्ड हमें भी गोली मारने वाला था.

हम रेंगकर कुत्ते के घर के पीछे छिप गए. हम बहुत डरे थे. हमने प्रार्थना की कि गार्ड का कुत्ता हमें सूंघे नहीं.

पहरेदार करीब आता गया. करीब और करीब.

हमने अपनी सांस रोके रखी.

हमने झुकने तक की हिम्मत नहीं की.

गार्ड और उसका कुत्ता हमारे पास से गुजर गए. एक क्षण बाद, वे दूर चले गए. हवा हमसे दूर जा रही थी, और अब कुत्ता हमारी गंध को नहीं सूंघ सकता था.

जब मार्च करने वाले कैदी हमारी नज़रों से ओझल हो गए, तो रेजिना और मैं घर की ओर दौड़े. अंदर, हमने चिचा को जमी हुई गोभी खाते हुए पाया.

"सिपी कहाँ है?" उसने पूछा.

"वो अगले घर में होगी," मैंने जवाब दिया.

"तुम भी कुछ गोभी खाओ," चिचा ने कहा.

हमें वो अब तक का सबसे अच्छा भोजन लगा. हमने पेंट्री की तलाशी ली और वहाँ अन्य भोजन पाया - एक स्मोक्ड सुअर, स्मोक्ड मीट, सॉसेज. जल्द ही हम तीनों का, इतना अधिक खाने से पेट में दर्द होने लगा. लेकिन हमें उसकी कोई परवाह नहीं थी. हमने बहुत दिनों से इतना अच्छा कुछ नहीं खाया था.

फिर सर्दी का सन्नाटा टूटा. हमें बाहर ट्रकों और टैंकों की आवाज सुनाई दी. जर्मन हमें खोजने के लिए वापस आ गए थे? हमने सोचा. अब हम सब मारे जाएंगे.

बड़े डर से हमने खिड़की से बाहर झाँका. ट्रक, टैंक, घोड़े और सैनिक सड़क पर चल रहे थे.

लेकिन इस बार कुछ अलग था. इतने उपकरण और अस्त्र-शस्त्र हमने पहले कभी नहीं देखे थे. सैनिकों ने जिस तरह की वर्दी पहनी थी, वो भी अलग लग रही थी. फिर हमने उनका झंडा देखा.

वो एक लाल झंडा था. और वो झंडा हवा में लहरा रहा था.

"हे भगवान!" हम चिल्लाए. "वो तो रूसी झंडा है! और वो रूसी सेना है!"

खुशी से रोने के साथ-साथ, हम अपने मुक्तिदाताओं का अभिवादन करने के लिए बर्फ के पार दौड़े. तब हमें समझ में आया कि जर्मन इतनी जल्दी में क्यों थे.

वे हारकर भाग रहे थे.

अब, आखिर में, हम आज़ाद थे!

अध्याय 7

हमें सिपी कभी नहीं मिली. हमें बाद में पता चला कि जब हम भागे तो उसने भी भागने की कोशिश की, लेकिन जर्मन पुलिस ने उसे पकड़ लिया. उन्होंने उसे अपने राइफल बटों से पीटा, फिर उसे अन्य कैदियों के साथ बर्गन-बेलसेन तक मार्च करने के लिए मजबूर किया, जहां उसकी मृत्यु हो गई.

हमारी मुक्ति के बाद, हमें पता चला कि हम पूर्वी जर्मनी के जगदस्चुट्ज़ गाँव में थे, जो ब्रेसलाऊ से बहुत दूर नहीं था. वहां रूसियों और जर्मनों के बीच लड़ाई हो रही थी.

हमारे रूसी मुक्तिदाताओं ने हमें उस सुनसान घर में रहने दिया, जहां हम छिपे थे. उन्होंने हमें खाना खिलाया, लेकिन उन्होंने हमें कभी कोई काम नहीं दिया. हमें उनकी खूनी कमीजों को धोना पड़ा और उनकी गायों के झुंड की देखभाल करनी पड़ी.

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मुक्त कैदी हमारे घर के पीछे से जाने लगे. वे एक रेलगाड़ी की ओर जा रहे थे जो ओल्स्क नामक कस्बे से होकर गुजरने वाली थी. कोई नहीं जानता था कि वो शहर कहाँ था, लेकिन हर कोई उसे खोजने की आशा कर रहा था.

हमने अपनी रहने के स्थान से लोगों के उस प्रवाह देखा - पोल्स, इटालियंस, चेक, रोमानियन, हंगेरियन - कई अलग-अलग देशों के लोग. वे आगे बढ़ रहे थे, लेकिन हम उनके साथ शामिल होना नहीं चाहते थे. हम केवल खाना और आराम करना चाहते थे. लेकिन छह सप्ताह के बाद हमारे रूसी रक्षकों ने हमसे जाने का आग्रह किया.

"हमारे पास खाना खत्म हो रहा है. अब आपको जाना ही होगा. आपको अपने-अपने घर जाना होगा."

लेकिन हम किसवरदा वापस नहीं जाना चाहते थे. वहां पर हमें घर छोड़ने को मजबूर किया गया था. अंत में, हमारे पास कोई विकल्प नहीं था. हमें वो स्थान छोड़ना पड़ा. हमने अपनी आजादी के बाद से हासिल किए कपड़ों को एक छोटी वैगन में लादा. फिर हम वैगन को खींचकर सड़क पर घूमने वाले अन्य लोगों में शामिल हो गए.

अगले दो हफ्तों के लिए, चिचा, रेजिना, और मैं, मुक्त यहूदियों और मुक्त सैनिक कैदियों के साथ-साथ पोल्स, अंग्रेज, फ्रांसीसी, अमेरिकी और अन्य लोगों के साथ चले. हम दिन में चलते थे और उस ओर जाते, जहाँ सड़क हमें ले जाती थी, और रात को हम खाली, छोड़े हुए घरों में सो जाते थे.

अंत में, हम एक बड़े चौराहे पर आ पहुंचे, जहाँ हम एकाएक रुक गए. हमारी थकान दूर हो गई. हमारा दिल तेजी से धड़कने लगा.

हमारे सामने, सूरज की रोशनी में चमकती हुई, रेल की दो पटरियां बिछी थीं. इतना स्पष्ट था कि जहां रेल की पटरियां होंगी, वहां कोई ट्रेन भी होनी चाहिए.

फिर हमने अपनी वैगन छोड़ दी और हमने तेज गति के साथ, रेलवे स्टेशन तक पटरियों का अनुसरण किया. अविश्वसनीय रूप से, हमें ओल्स्क शहर मिल गया. हमने जर्मनी से बाहर निकलने का दरवाजा खोज लिया था!

पिछली बार जब हम ट्रेन में सवार हुए थे, तब हम मवेशियों की कारों में सवार हुए थे. अब, ओल्स्क से निकलने वाली ट्रेन में, हम नियमित यात्री डिब्बों में सवार थे. हमने एक और लंबी यात्रा शुरू की थी, लेकिन इस बार बैठने के लिए जगह, खड़े होने के लिए और सोने के लिए पर्याप्त जगह थी.

इसके अलावा, हमारी रक्षा के लिए बहुत सारे रूसी सैनिक थे. इससे भी अच्छी बात यह थी कि रूसी सेना की एक बहुत ही कर्मठ महिला सिपाही, हमारे और अपने साथियों को खिलाने के लिए लगातार खाना बना रही थी.

ट्रेन कहाँ जा रही थी? वो हम नहीं जानते थे, और न ही हमें उसकी कोई परवाह थी, जब तक कि वो हमें नात्ज़ी अत्याचारियों की भूमि से दूर ले जा रही थी.

दरअसल, ट्रेन,काला सागर (ब्लैक-सी) पर बसे बम्बों से ध्वस्त शहर - ओडेसा जा रही थी.

ट्रेन में दो संतुष्ट हफ्तों के बाद, चिचा, रेजिना और मैं ओडेसा पहुंचे. वो 4 अप्रैल, 1945 का दिन था, और युद्ध अभी भी उग्र था.

सभी लोग ट्रेन से उतरे. अन्य सभी यात्रियों के साथ, हमें रेलमार्ग से दूर एक बड़ी इमारत में ले जाया गया. इमारत ऐसे लोगों से भरी हुई थी, जो लगता था, दुनिया की सभी भाषाएँ बोल रहे हों. हर कोई जानकारी के लिए बेताब था. सब एक ही तरह के सवाल पूछ रहे थे.

"आप कहां के रहने वाले हैं?"

"कहाँ जा रहे हैं?"

"क्या तुम पोलिश हो?"

"क्या आप हंगेरियन हैं?"

"क्या आप इतालवी हैं?"

"क्या आप ऑशविट्ज़ में थे?"

"क्या तुमने मेरे भाई को देखा?"

"क्या तुमने मेरी बहन को देखा?"

हमने एक युवा ब्रिटिश पायलट से दोस्ती की, जो एक जर्मन कैदी-युद्ध शिविर से मुक्त हुआ था. वो यहूदी था, और हम उससे यहूदी (यिडिश) में बात कर सकते थे.

"अमेरिका में हमारे पिता हैं. हम उससे जुड़ना चाहते हैं. हम ऑशविट्ज़ में थे. हमने अपनी मां और दो बहनों को खो दिया है. हमने अपना भाई भी खो दिया है. हम अमेरिका जाना चाहते हैं."

वो नौजवान हमें एक अमेरिकी सैन्य अधिकारी के पास ले गया, जिसने हमारी कहानी को बड़े ध्यान से सुना. हम देख सकते थे कि वो हमारी कहानी सुनकर काफी हिल गया था.

"मैं आपकी मदद करने की कोशिश करूंगा," उस आदमी ने सुकून भरे स्वर में कहा.

दो दिन बाद, 6 अप्रैल को, चिचा, रेजिना और मैं, खाकी सैन्य वर्दी पहने हुए, स्वतंत्रता जहाज "एस-एस ब्रांड व्हिटलॉक" पर अमरीका के लिए रवाना हुए.

8 मई, 1945 को यूरोप में लड़ाई समाप्त हो गई. नात्ज़ी जर्मनी युद्ध हार गया था.

अंत के शब्द

जिस दिन हम अमेरिका पहुंचे हमारे पिता हमसे बाल्टीमोर, मैरीलैंड में आकर मिले. उन्होंने हमें गले लगाया और चूमा और फिर हम सब रो पड़े. यह एक सुखद-दुखद पुनर्मिलन था. हमने छह साल पहले 1939 के बाद एक-दूसरे को नहीं देखा था, जब पिताजी अपने परिवार को बचाने के लिए अमेरिका के लिए रवाना हुए थे.

तब से बहुत कुछ बदल चुका था. हमें शायद पता नहीं था कि हमें क्या कहना चाहिए.

अगले दिन, हमारे पिता हमें न्यू यॉर्क के ब्रुकलिन वाले अपने घर ले गए.

कुछ ही समय बाद, हमें अपने भाई फिलिप का एक पत्र मिला. वो जीवित था, लेकिन एक नात्ज़ी ने उसके पैर में गोली मार दी थी.

वो जर्मनी में एक अमेरिकी अस्पताल में ठीक हो रहा था और वो भी जल्द ही हमारे साथ आकर जुड़ेगा.

हम अमेरिका में नए सिरे से जीवन शुरू करने के लिए तैयार थे.

इतिहास 1939 से 1945 के वर्षों को द्वितीय विश्व युद्ध का समय कहता है. इन वर्षों के दौरान, तानाशाह एडोल्फ हिटलर के नेतृत्व में नात्ज़ी जर्मनी की सशस्त्र सेना ने यूरोप के अधिकांश देशों, बाल्कन और सोवियत संघ के बड़े हिस्से में मौत और विनाश लाया.

1929 में महामंदी शुरू होने के कुछ ही समय बाद हिटलर और उनकी नात्ज़ी पार्टी जर्मनी में सत्ता में आई. दुनिया भर में लाखों कामकाजी लोगों ने अपनी नौकरी खो दी. 1932 तक, ग्रेट ब्रिटेन में लगभग तीस लाख, अमेरिका में सवा करोड़ और जर्मनी में पचपन लाख से अधिक लोगों के पास नौकरी नहीं थी.

1933 में, जर्मनी में 620 लाख से अधिक लोग रहते थे. उनमें से केवल पांच लाख ही यहूदी थे. यहूदियों से घृणा करने वाले हिटलर ने यहूदी लोगों पर बेरोज़गारी पैदा करने का अन्यायपूर्ण आरोप लगाया.

वो जानता था कि यह सच नहीं था, लेकिन वह यह भी जानता था कि यहूदी बिना राजनीतिक शक्ति के, जर्मन आबादी का एक छोटा सा हिस्सा थे. उसका मानना था कि यदि वो यहूदियों के खिलाफ झूठे आरोप को बार-बार दोहराते रहेगा, तो कई गैर-यहूदी उस बात पर विश्वास करेंगे. इसे "बड़े झूठ की विधि" के रूप में जाना जाता है.

जल्द ही बड़ी संख्या में बेरोजगार जर्मनों ने हिटलर या राजनीतिक समर्थन किया. वे असंतुष्ट थे और अपनी कठिनाई के लिए लोगों को दोष देने की तलाश में थे. वे हिटलर के "बड़े झूठ" पर विश्वास करने को तैयार थे.

1933 में, राष्ट्रपति पॉल वॉन हिंडनबर्ग ने नाजी एडॉल्फ हिटलर को जर्मनी का चांसलर नामित किया. इसके तुरंत बाद, वो नेता "दर फ्यूहरर" के रूप में जाना जाने लगा, क्योंकि उसने एक तानाशाह की शक्तियों को अपने हाथों में ले लिया था.

हिटलर ने अपने शासन के तहत, सभी श्रमिक संघों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, और सभी विपक्षी राजनीतिक दलों को अवैध बना दिया गया था. 1935 तक, नात्ज़ियों ने यहूदियों को कंसंट्रेशन (यातना) शिविरों में भेजना शुरू कर दिया, जहाँ उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया और उन्हें मार डाला गया.

यह उस मास्टर प्लान का हिस्सा था जिसे हिटलर ने "यहूदी समस्या" कहा था. मास्टर प्लान को "अंतिम समाधान" या "फाइनल सलूशन" नाम दिया गया था. यह पूरे यहूदी लोगों के विनाश के लिए एक कोड वाक्यांश था. एक पूरी नस्ल के विनाश को नरसंहार कहा जाता है.

इस बीच, हिटलर ने कई बेरोजगार जर्मनों को सैन्य कारखानों और शिपयार्ड में काम पर वापस रखा. उन्होंने तेजी से युद्ध के विमानों, भारी टैंकों, बख्तरबंद वाहनों का निर्माण किया, और नौसेना के जहाज भी बनाए. जल्द ही जर्मनी के पास एक शक्तिशाली सेना, नौसेना और वायु सेना थी.

हिटलर ने इटली और जापान के साथ एक सैन्य गठबंधन बनाया. तीन देशों - नात्ज़ी जर्मनी, फासीवादी इटली और इंपीरियल जापान - को धुरी (एक्सिस) कहा जाता था.

1939 तक, हिटलर के सशस्त्र बलों ने सार नदी घाटी, राइनलैंड, ऑस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया में निर्विरोध मार्च किया. ऐसा प्रतीत होता था कि हिटलर का इरादा पूरे यूरोप में नात्ज़ी जर्मनी के शासन का विस्तार करने का था.

यह उस वर्ष की गर्मियों में बहुत स्पष्ट हो गया, जब सोवियत संघ के तानाशाह स्टालिन और हिटलर ने, एक दूसरे के देश पर हमला न करने की कसम खाते हुए, गैर-आक्रामकता के समझौते पर सहमति व्यक्त की.

उस संधि ने पोलैंड पर हमला करने के लिए अपनी विशाल सेना और वायु सेना का उपयोग करने के लिए हिटलर को मुक्त कर दिया. यह उसने 1 सितंबर, 1939 को, ब्लिट्जक्रेग, एक बिजली युद्ध के साथ, अपनी सारी शक्ति का उपयोग करके किया.

तुरंत, ग्रेट-ब्रिटेन और फ्रांस ने, नात्ज़ी जर्मनी पर युद्ध की घोषणा की, और द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ.

हिटलर ने 1941 के जून में स्टालिन के साथ अपना गैर-आक्रामकता समझौता तोड़ दिया, जब हजारों जर्मन बख्तरबंद स्तंभों ने सोवियत संघ पर आक्रमण किया. इस प्रकार, रूस भी जर्मनी के खिलाफ युद्ध में शामिल हो गया.

7 दिसंबर, 1941 को सुदूर पूर्व में जर्मनी के सहयोगी जापान ने पर्ल हार्बर, हवाई में अमेरिकी नौसैनिक अड्डे पर चुपके से हमला किया. नतीजतन, अमेरिका ने भी एक्सिस के खिलाफ युद्ध में प्रवेश किया.

युद्ध तीन से अधिक वर्षों तक जारी रहा. इस दौरान कई महान युद्ध लड़े गए - जमीन पर, समुद्र और हवा में.

हिटलर के विमानों, टैंकों और रॉकेटों ने पोलैंड, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन, यूगोस्लाविया, ग्रीस, रोमानिया, सोवियत संघ और अन्य देशों के शहरों, गांवों और शहरों को नष्ट किया, जिससे लाखों लोग मारे गए या घायल हो गए.

लगभग हर जगह, नात्ज़ी सेना विजयी हुई. और, हर जगह, शांतिपूर्ण, निहत्थे यहूदियों पर बेरहमी से हमला किया गया.

हालाँकि, 1944 के अंत तक, जर्मन सेनाओं को युद्ध के मैदानों में बड़ी हार का सामना करना पड़ा था, उनकी नौसेना को काफी हद तक नष्ट कर दिया गया था, और उनकी वायु सेना ने आसमान पर अपना नियंत्रण खो दिया था. तब जर्मनी ने महसूस किया कि वे युद्ध जीतने वाले नहीं थे.

लेकिन नात्ज़ियों का मानना था कि वे अभी भी यहूदियों के खिलाफ जीत सकते थे. वे दुनिया के हर एक यहूदी को नष्ट करना चाहते थे. वास्तव में, वे यूरोप में लगभग सफल हो गए, 1945 में युद्ध के अंत तक, धुरी (एक्सिस) शक्तियों के बिना-शर्त आत्मसमर्पण के साथ, नात्ज़ियों ने लगभग साठ लाख यहूदी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की हत्या कर दी थी.

यहूदियों के खिलाफ नाजी जर्मनी के युद्ध को प्रलय (होलोकॉस्ट) के रूप में जाना जाता है.

अंत